ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-3 अंक : 31

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जुलाई : 2019

# दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

आंधियाँ सदा चलती नहीं, मुश्किलें सदा रहती नहीं ।
मिलेगी तुझे मंजिल तेरी, बस तू ज़रा कोशिश तो कर ।
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई



विकलांगोको दिव्यांग कहे यह महज
एक औपचारिकता ना रहे ।
– प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

# निरामय हेल्थ पॉलिसी

## पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

## लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

**यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा**

## आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

### सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

# संपादकीय

किसी ने क्या खूब कहा है कि एक छोटे से दाने में अनंत जीवनको जन्म देने की शक्ति और संभावना है।

शक्तिहीन और संभावना रहित कही भी... कुछ भी... कोई भी नही है। सामर्थ्यहीन तो वह विचार है, जिसके पास संभावना देखने का व्यापक दृष्टिकोण नहीं है।

यही सोचकर शायद मेने इस पत्रिका की 'दिव्यांग सेतु' की शरुआत की थी कि छोटा ही सही पर आगे चलकर दिव्यांग सेवना के क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। और ऐसा हो भी रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हम ज्यादा से ज्यादा दिव्यांग सेवी संस्थाओ से लोगो को अवगत करा पा रहे है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग दिव्यांगो की सेवा का महत्व समझे और इस क्षेत्र से जुडे।

इस राह में कदम से कदम मिलाकर अभी तक हमारा साथ देने के लिए अनेकानेक धन्यवाद। आप भी यदि किसी ऐसी दिव्यांगसेवी संस्था या व्यक्ति की जानकारी हमारी इस पत्रिका के माध्यम से दूसरे तक पहूंचाना चाहे, तो आपका स्वागत है।


# दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जुलाई : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 3 अंक : 31

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

**प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.**

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

# मै सुभाष प्रजापति

मेहसाना जिले के एक छोटे से गाँव से हुं। मै एक दिव्यांग हुं। जन्म के ६ महिने बाद मुजे बाँए पैर मे पोलियो हो गया था। मै २ बैसाखी के सहारे चलता था। मेरे माता-पिता मिट्टी के बर्तन एवम ईटे बनाने का काम करते थे। मैने दिव्याँग बच्चो की स्कूल से १०वी-१२ की पढाई पुरी कर वापस अपने गाँव के नजदीकी शहर ऊंझा से अपने स्नातक तक की पढाई पुरी की।

मुजे बचपन से ही चित्रकला और गायकी का शौख रहा है। मै चित्र शिक्षक बनना चाहता था पर परिवार के आर्थिक हालात अच्छे ना होने के चलते ये हो ना सका और फिर मै अपने बडे भाई साहब और माता-पिता रोजी-रोटी के लिये सन १९९५ मे अहमदाबाद आ गए। बडे भाई साहब ने टैम्पो ड्राइवर का जोब ढूँढ लिया और मैने पेईन्टींग का काम शुरू कर दिया।

जीवनकी गाडी जीवनपथ पर चल रही थी की फिर एक बार कुदरत ने एक और कसौटी ले ली। सन २००७ मे मै अपना काम करते करते गिर गया। और मेरा बांया पैर जीस के बल पर मै चलता था उसका बोल टुट गया। ओपरेशन हुआ टुटा हुआ बोल निकाल दिया। ६ महिने बिस्तर पर रहा। मगर अब मै शारिरीक तौर पर मेहनत वाला काम करने के लिए सक्षम रहा नही।

मै समज नही पा रहा था की मै अब क्या करू ? तभी मुजे गुजरात सरकार की "उम्मीद" रोजगारलक्षी तालिम केन्द्र के बारे मे सुचना मिली। मैने वहां से कम्प्युटर की तालिम ली और मेरी महेनत और स्कील देख कर मुजे उसी केन्द्र मे कम्प्युटर टीचर की जोब दे दी। ५ साल जोब की। उस दौरान करीब ३००० युवक-युवतियो को मैने कम्प्युटर शीखाया। २०११ मे मैने अहमदाबाद के चांदलोडिया विस्तार मे खुद का कम्प्युटर क्लासीस, झेरोक्ष, लेमीनेशन, का बिजनेस शुरू कीया।

फिर से गाडी जीवनपथ पर चल रही थी की फिर एक बार कुदरत ने एक और झटका दे दिया। इस बार की कुदरत की मार इतनी भयंकर थी की मै सचमुच बरबाद और लाचार हो गया। हादसा कुछ ऐसा था २०१७ मे राखी के दिन मै अपने ही घर मे ऐसा गिरा की मेरी रीढ की हड्डी मे इन्जरी हो गइ। और मेरे कमर के निचे का हिस्सा पैरेलाईज हो गया। अब मै न बैठ पाता था ओर ना ही चल पाता था।

डोक्टर्स ने ओपरेशन नही कराने की सलाह दी। दवाईयां से सही अगर होता है तो ठीक है। मगर इलाज लंबा चलेगा। और अगर रीकवरी आई तो मेरा नसीब। मेरी आंखो के सामने अंधेरा छा गया। दैढ साल तक मै बिस्तर पे सोया हुआ रहा। खाना, पीना, टोइलेट, बाथरुम सब बिस्तरमे। मेरी माताजी हिम्मत नही हारी ८२ साल की उमर होने के बावजुद वो मेरी सेवा और दुआ करती रही। मेरे भाई साहब ने और उनके पुरे परिवारने मुजे हिम्मत दी। और फिर उम्मीद की किरन जगी। पैर मे हलन चलन होने लगी। और तब मुजे फीजीयो थेरपी की जरूरत पडी। मगर वो बहोत महेंगी ट्रीटमेन्ट थी जो मै नही करवा सकता था।

मुजे मेरे एक मित्रने मिहिरभाई शाह का संपर्क करने को कहा जो ओमकार फाउन्डेशन नामक संस्था चलाते है और दिव्यांगजनो की सेवा करते है। मैने उनसे संपर्क कर के मेरी पुरी आपबिती सुनाई। इन्होने बिना देरी किये मेरे लिये फिजीयो थेरापीस्ट का बंदोबस्त कर दिया। मेरी पुरी दवाईयो का खर्च भी उठा लिया और खुद मुजे मिलने भी आ गये और मुजे हर संभव मदद के लिये आश्वस्त भी कीया।

आज इनकी मदद से मेरा फीजीयो थेरापी चल रहा है। और अब मेरी तबियत काफी सुधार पर है। डो. जिगर पटेल मेरे फिजीयो है। जीन्होने १२ साल अमरिका मे प्रेक्टीस की है। इन्होने भी मुजे विश्वास दिलाया है की आप बिलकुल पहले की तरह ठीक हो जायेंगे और काम भी कर सकोगे।

मै ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी मिहिरभाई शाह का आभारी हूं। धन्यवाद...

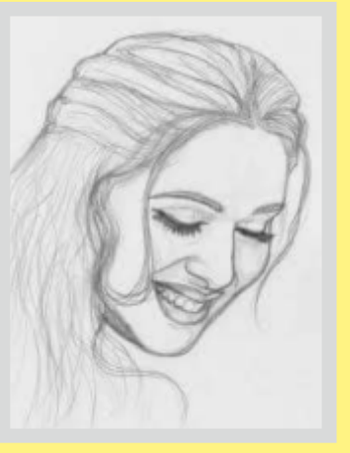

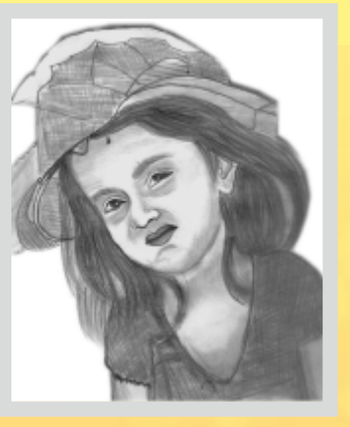

## सुभाषजीने बनाये हुए चित्र ।

**अगर आप अपना चित्र सुभाषजी से बनवाना चाहते हो तो आप सुभाषजी का संपर्क कर सकते है ।**
**मो. : 7041922180**

# एक डोक्टर की आत्मीयता...

## डॉक्टर जीगर पटेल

लगभग एक महीने पहले, ॐकार सेवादल कच्छ के एक सदस्य, जिग्नेश भाई सोनी ने मुझे फोन करके बताया कि अहमदाबाद में सुभाष प्रजापति नाम के एक दिव्यांग व्यक्ति रहते है, जिसकी स्थिति बहुत सामान्य है। यदि आप ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट की और से आप कोई मदद कर सकते हो, तो आप उनसे संपर्क करना। मैंने तुरंत अपने ॐकार सेवा दल (अहमदाबाद) के सदस्यों से कहा कि आप सुभाषजी के घर जाकर देखीये की हम उनकी क्या मदद कर सकते है। हम जितना हो सके उतनी मदद करेंगे। हमारे ॐकार सेवादल के तीन सदस्य इसके बारे में पूछताछ करने के लिए उनके घर गए और मालूम पड़ा उन्हें दवाईयो की जरुरत है। और उसके साथ-साथ एक फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर की भी आवश्यकता है। जैसे ही मुजे पता चला मैंने तुरंत ॐकार सेवादल के सदस्यो को सूचित किया की आप उन्हे तीन महिने की दवाईया उपलब्ध करवाए। और मैने एक फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर के लिए जांच शुरू की। मैंने लगभग पंद्रह से बीस डॉक्टरों से बात की और उन्हें सुभाषजी की स्थिति के बारे में बताया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कई डॉक्टर अपने अस्पताल से सुभाषजी का घर दूर होने के कारण वहा जांच करने भी नहीं गए और कई डॉक्टर ने फीस बहुत कम है, यह कहते हुए सुभाषजी को जांच करने नहीं गए। दो डॉक्टर जो उन्हें जांचने के लिए गए थे, उन्होंने कहा कि हमारे सहायक डॉक्टर उनके पास आएंगे जिनको अभी सीखना बाकी है। मुझे अंदर से ऐसा लगा कि जो नौसिखिया डॉक्टर है, वह सुभाषजी को कैसे खड़ा कर सकता है, और उनकी समस्या भी बहुत जटिल है। बहुत प्रयास के बाद, एक डॉक्टरसे संपर्क हुआ, जिनका नाम है डॉ. जिगर पटेल, उन्हों ने सुभाषजी को देखने के बाद, और बिना किसी शुल्क के बारे में बात किए तुरंत उनकी सारवार शुरु कर दी। उन्होंने लगभग एक घंटे तक व्यायाम करवाया। उन्होंने सुभाषजी से कहा कि आप व्यायाम से धीरेधीरे खड़े हो सकते हैं और मैं आपको व्यायाम करवाऊंगा और बहुत ही कम शुल्क ले कर। मुझे सुभाषजी का फोन आया और डॉक्टर से बात करवाई। डॉक्टर जीगरभाई ने बहुत ही भावनात्मक रूप से मुझे बताया कि सुभाषजी अपना काम खुद कर सके मैं ऐसा प्रयास करूँगा। यह सुनकर मेरा दिल बहुत खुश हो गया। जहाँ कुछ डॉक्टर जाने के लिए तैयार नहीं थे, वहाँ डॉ. जिगरभाई जो अमेरिका से पढ लिखकर आये थे, वो सुभाषजी की मदद करने के लिए तैयार हो गए। पिछले पंद्रह दिनों से हररोज़ डॉ. जिगरभाई एक घंटे सुभाषजी को व्यायाम करवाते है। सुभाषजी की तबियत में अब परिवर्तन आने लगा है, मेरी डॉक्टर जिगरभाई से यही गुझारिश है की वह दिव्यांग जनों के लिए ऐसे ही पुण्य के कार्य करते रहे।

- ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी मिहीरभाई शाह

सुभाष प्रजापतिजी को व्यायाम कराते हुए डॉक्टर जिगर पटेल

# वोइस टू दिव्यांग

अखिल भारतीय कलाकार संघ द्वारा ६ से १० जून को शिमला में अखिल भारतीय नाटक और नृत्य स्पर्धा का आयोजन किया गया था। जिसमें शहर के नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट संचालित ने डॉ. हरिकृष्ण डाहयाभाई स्वामी स्कूल फॉर मेंटली चैलेंज्ड़ के दिव्यांग बच्चों को आमंत्रित किया गया था। जिसमें संस्था के दिव्यांग बच्चों में से 13 मनो दिव्यांग बच्चों ने शिव तांडव, हनुमान चालीसा और आर्मी डांस पेश किया। आखिरी दिन के पुरस्कार समारोह में, मनो दिव्यांग बच्चों के परफॉर्मेंस को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। इन मनो दिव्यांग बच्चोंने अर्ध-शास्त्रीय, वरिष्ठ समूह श्रेणी में भाग लिया। हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री सुरेशभाई भारद्वाज और 'भाभीजी घर पे है' सीरियल फेम रोहित गोर उर्फ तिवारीजी और शिमला शहर के मेयर पुरस्कार समारोह में उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों की प्रतिभा को अपने स्थान पर खड़े हो कर सराहा और पुरस्कार की पेशकश की। प्रतियोगिता 22 राज्यों से 380 समूह नृत्य प्रदर्शन के लिए थी। जिन छात्रों ने संगठन द्वारा प्राप्त इस विशेष पुरस्कार में भाग लिया है वह उनके शिक्षक श्री संगीता पांचाल, कृतिका प्रजापति और नीलेश पांचाल के आभारी है।

**फिजिकल डिसेबिलिटी इंसान को काफी मजबूत बनाती है। कहा भी जाता है कि डिसेबिलिटी तो सिर्फ स्टेट ऑफ माइंड है। इस वाक्य को कई पॉपुलर इंडियंस ने सही साबित किया है। आज जब पूरी दुनिया विश्व विकलांगता दिवस मना रही है। तो ऐसे मौके पर सलाम करते हैं उन भारतीयों को....जिन्होंने अपनी डिसेबिलिटी को पीछे छोड़ बनाई अलग पहचान.....**

## (१) अरुणिमा सिन्हा : -

अरुणिमा सिन्हा ने अपनी जिंदगी में कई मुश्किलों का समाना किया। अरुणिमा को चलती ट्रेन से डाकुओं ने नीचे फेंक दिया था। जिससे उन्हें अपना एक पैर खोना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने अपने जज्बे में कोई कमी नहीं आने दी और दो साल पहले ही माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली अरुणिमा पहली विकलांग महिला बनीं।

## (२) एच रामकृष्णन : -

रामाकृष्णन कम उम्र में ही पोलिया का शिकार हो गए। जिसके चलते उनके दोनों पैर खराब हो गए। शुरुआत में उन्हें कई स्कूलों ने अपाहिज के चलते एडमीशन देने से मना कर दिया था। लेकिन रामाकृष्णन ने कभी हार नहीं मानी और अपनी जिंदगी को बेहतर ढंग से जिया। उन्होंने 40 साल तक जर्नलिस्ट के तौर पर काम किया। और फिलहाल वह एसएस म्यूजिक टेलिविजन चैनल के सीईओ हैं।

## (३) शकर नाइक : -

भारत की तरफ से खेलते हुए शेखर नाइक ने टी-20 ब्लाइंड क्रिकेट वर्ल्ड चैंपियन का खिताब जीता। उन्होंने इस टूर्नामेंट में 32 शतक लगाए थे।

## (४) रविंद्र जैन : -

भारतीय सिनेमा के मशहूर गीतकार-संगीतकार रविंद्र जैन ने अपनी काबिलियत के दम पर बॉलीवुड को कई बेहतरीन गानें दिए। रविंद्र जन्म से ही अंधे थे लेकिन उन्होंने अपनी लगन और मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़ी। और बाद में एक बेहतरीन संगीतकार कहलाए। रविंद्र जैन का 9 अक्टूबर को देहांत हो गया था।

## (५) गिरीश शर्मा : -

गिरीश शर्मा बैडमिंटन चैंपियन रह चुके हैं। हालांकि बचपन में ट्रेन एक्सीडेंट में उन्होंने अपनी एक टांग खो दी थी। इसके बावजूद वह कभी पीछे नहीं हटे और बेहतरीन प्लेयर बनकर सामने आए।

## (६) एच. बोनिफेस प्रभु : -

प्रभु 4 साल की उम्र में ही पैरालिसिस का शिकार हो गए। लेकिन उनकी यह डिसेबिलिटी कभी भी उनके लक्ष्य के सामने नहीं आई। प्रभु ने स्कूल शिक्षा पूरी करके टेनिस को अपना करियर बनाया । और आखिरकार वह सबसे बड़े quadriplegic wheelchair tennis player बनकर उभरे।

## (७) सुधा चंद्रन : -

सुधा चंद्रन इंडियन एक्ट्रेस और क्लॉसिकल डांसर हैं। सुधा का जन्म केरल में हुआ था। वह जब 16 साल की थीं, तब एक दुर्घटना का शिकार हो गईं थी। डॉक्टर्स ने पैर का ऑपरेशन किया लेकिन घाव पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाए। जो बाद में इंफेक्शन का कारण बना और सुधा को अपना एक पैर खोना पड़ा। सुधा ने इसे अपनी कमजोरी नहीं माना और नकली पैर की बदौलत एक बेहतरीन डांसर बनकर उभरीं।

## ( ८) राजेंद्र सिंह रहलू : -

8 साल की उम्र में राजेंद्र सिंह राहेलु पोलियो का शिकार बन गए थे। वह चल नहीं सकते लेकिन यह कमजोरी उनके सपनों को पूरा होने से नहीं रोक पाई। कॉमनवेल्थ गेम्स 2014 में राजेंद्र ने पॉवरलिफ्टिंग में सिलवर मेडल जीतकर इतिहास रच दिया था।

## (९) डॉ. सुरेश आडवाणी : -

सुरेश अडवाणी एक कैंसर के प्रसिद्ध डॉक्टर हैं। लेकिन वह 8 साल की उम्र में पोलिया का शिकार बन गए। 2002 में पद्मश्री और 2012 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

## (१०) मालती कृष्णमूर्ति होल्ला : -

मालती इंटरनेशनल पैरा एथलीट हैं। पैरा ओलिंपिक की 200मी रेस में वह गोल्ड मेडल जीत चुकी हैं।

# नेत्रहीन होते हुए भी कई दृष्टिहीन लोगों को राह दिखा रही है टिफ्फनी !

**एक वक्त ऐसा था जब वो खुद चल नहीं सकती थी, पर आज वो दुसरो को चलना सिखा रही है। आईये मिलते है टिफ्फनी से, जो नेत्रहीन होकर भी बहुत दूर की दृष्टी रखती है।**

"लोग ऐसा क्यूँ सोचते है कि मैं खुद चल नही सकती या मैं अकेले सफ़र नही कर सकती। मेरे पास बात करने के लिए जुबान है, सोचने के लिए दिमाग है, मैं चल सकती हूँ और अपनी छड़ी की मदद से खुद अपना रास्ता भी ढूंड सकती हूँ। फिर मैं अकेले सफ़र क्यों नहीं कर सकती हूँ? मैं पिंजरे मैं कैद एक पंछी की तरह थी, जिसे बिना सहारे के अकेले बाहर निकलने की इजाज़त नहीं थी। पर अब मेरी जिंदगी बदल चुकी है।" - टिफ्फनी ब्रार बड़े उत्साह से बताती है।

जो कभी कुछ करने का सोच भी नही पाती थी वो आज अपने जैसे दुसरे नेत्रहीन लोगो की सहायता कर रही है। किसी दुसरे पर निर्भर रहने वाली लड़की आज आत्मनिर्भर है।

२६ वर्षीय टिफ्फ़नी एक अध्यापिका, उद्योजिका और मोटीवेशनल स्पीकर भी है पर वो देख नही सकती। अपने अंधत्व को मात देकर उसने अपनी एक पहचान बनायी है।

**खुद नेत्रहीन होने के कारण टिफ्फनी अपने जैसे लोगो को होनेवाली परेशानियों से वाकिफ है इसलिये वो दुसरो को रास्ता दिखा सकती है।**

कुछ साल पहले उसे खुद पे भरोसा नही था इस कारण वो अपनी जरूरते पूरी नही कर पाती थी। वो कभी स्वयं बाहर नहीं जा पाती थी। 'सफ़ेद छडी' का इस्तेमाल राह पर चलने के लिये होता है इतना भी उसे पता नहीं था। टिफ्फ़नी १८ साल की उम्र तक एक सर्वसाधारण नेत्रहीन लड़की थी जो दूसरों पर निर्भर थी।

टिफ्फ़नी के पिता आर्मी में थे, इसलिये उसकी पढाई दार्जिलिंग, दिल्ली, तिरुवनंतपुरम और वेलिंग्टन जैसे कई शहरो में हुयी । उसके पिता जनरल ब्रार अपने नौकरी में व्यस्त थे, इसलिये उसकी माँ लेज़ली उसका खयाल रखती थी। टिफ्फ़नी अपनी माँ से काफी प्रभावित थी। लेज़ली हमेशा गरीबो की मदद करती थी। अपनी माँ से मिली हुयी इस प्रेरणा से उसने बड़ी होकर एक मिसाल कायम की।

१२ साल की उम्र में टिफ्फ़नी ने अपनी माँ को खो दिया। वो दिन उसने बड़े कठिनाईयों के साथ गुजारे। उसके पिता की नौकरी दिल्ली में थी पर उस बड़े शहर में वो जैसे खो गयी थी। वो अपनी जिन्दगी सरलता से जीना चाहती थी, इसलिये तिरुवनंतपुरम वापस चली गयी। उस शहर में उसने ११ वी कक्षा तक पढाई पूरी की और उसके बाद वेलिंग्टन में जाकर आगे की पढाई की।

**विनीता अक्का टिफ्फ़नी के होस्टेल में काम करती थी। विनीता अक्का उसे कपडे पहनना, कपडे फोल्ड करना, अपना बिस्तर ठीक करना जैसे कई रोज़मर्रा के साधारण काम सिखाती थी।**

स्कूल में उसे कभीभी ऐसी छोटी छोटी चीजे नहीं सिखायी गयी थी। उसे याद है कि वो और उसके जैसे अन्य नेत्रहीन लोग कपडे भी ठीक तरह से पहन नहीं पाते थे। विनीता अक्का की वजह से उसे अहसास हुआ कि उसे भी अच्छे कपडे पहनना चाहिये, अच्छा दिखना चाहिये और अपने छोटे छोटे काम खुद करना चाहिये। और इसी सोच के साथ अपने आत्मनिर्भर होने के मार्ग पर वो चल पड़ी थी।

टिफ्फनी खुद बाहर नहीं जा पाती थी। उसके साथ हमेशा कोई न कोई होता था। लोग हमेशा "ये नामुमकिन है" और "उससे नहीं हो पायेगा" – इस तरह उसके बारे में कहते थे। पर टिफ्फनी ने सबको गलत साबित कर दिखाया। अपनी जिंदगी के १८ साल तक वो किसी और पर निर्भर थी।

वेलिंग्टन में शिक्षा पूरी करके वो तिरुवनंतपुरम में B.A. (इंग्लिश) की पढाई करने के लिये आयी। इस बार उसके साथ विनीता अक्का भी थी। उसके पिता उसे कंथारी सेंटर लेके गये जहा पर उसे लीडरशिप ट्रेनिंग दी गयी जिससे उसमे बहोत बदलाव दिखाई दिया। टिफ्फनी ने कंथारी सेंटर जाने के लिये अपने पिता का हाथ थामा हुआ था। कंथारी सेंटर के सह-संस्थापक साब्रिये तेनबेरकेन ने उसे सफ़ेद छड़ी दी और कहा कि अब इसके सहारे उसे चलना चाहिये।

उसके पिता जोर से चिल्लाने लगे "नहीं, तुम अकेले नहीं चल पाओगी। यहाँ हर पल दिक्कते है। तुम्हे परशानी होगी।" पर टिफ्फनी ने अपने पिता का हाथ छोड़ा और सफ़ेद छड़ी पकड ली। टिफ्फनी रोज उस सफ़ेद छड़ी की मदत से अपने घर से ऑफिस आने लगी। छड़ी की आवाज से वो अपनापन महसूस करती थी।

**अब उसे एहसास होने लगा था कि उसे खुद के सहारे चलना है।**

टिफ्फनी कंथारी सेंटर में रिसेप्शनिस्ट का काम करने लगी और उद्योजक का कोर्स भी करने लगी। वो अपना रास्ता खुद ढूंड पाती थी। वो बस में सफर करती थी और जरुरत पड़ने पर लोगो से मदत लेती थी। अपने सफ़र में उसने दोस्त भी बना लिये थे जिन्हें उस पर नाज़ था।

**साब्रिये तेनबेरकेन खुद एक नेत्रहीन व्यक्ति होकर भी अपने पति पॉल क्रोनेनबेर्ग, जो कंथारी सेंटर के सह-संस्थापक है, उनके साथ मिलकर अन्य नेत्रहीनो की मदत कर रही थी। टिफ्फनी, साब्रिये के इस अच्छे काम से प्रभावित थी।**

साब्रिये और उसके पति ने तिब्बत में नेत्रहीनो के स्कूल की स्थापना की और "ब्रेल विथआउट  बॉर्डर्स" नाम से एक फाउंडेशन की भी स्थापना की जो दृष्टीहीन लोगो को अपनी जिंदगी सवारने का मौका देती है।

टिफ्फनी को एहसास हुआ कि वो दुसरे दृष्टिहीन लोगो को भी सही रास्ता दिखाकर उनकी मदद कर सकती है।

अपने इस सपने को पूरा करने के उद्देश से उसने श्री रामकृष्ण मिशन विद्यालय, कोइम्बतुर से B.Ed. (स्पेशल एजुकेशन) में पढाई करने का निश्चय किया है। खुद नेत्रहीन होने के कारण वो दुसरे दृष्टिहीन लोगो की परेशानियों को समझ सकती है। उनमे आत्मविश्वास, तत्परता और रोजमर्रा की जरूरतो को पूरा करने की क्षमता की कमी होती है। २००१ के सेन्सस सर्वे के मुताबिक केरला राज्य में ४००,००० नेत्रहीन है।

"वो सब नेत्रहीन लोग कहा है ? हम लोगो को वो सडको पर चलते हुये क्यों नही दिखते है ? मैंने ठान लीया कि मैं उनके लिये कुछ करू।"

टिफ्फनी बड़े ही गर्व से कहती है कि ऐसा उसने २०१२ में सोचा जब उसकी पढाई पूरी हुयी। अपने इस मिशन को पूरा करने के लिये उसने "ज्योतिर्गमय" नामसे प्रोजेक्ट शुरू किया।

**ज्योतिर्गमय का मतलब होता है 'अँधेरे से उजाले की ओर'। टिफ्फनी ने ज्योतिर्गमय नामक मोबाइल अंध स्कूल की स्थापना की जिसका उद्देश है कि अगर नेत्रहीन लोग स्कूल में नहीं आ सकते तो स्कूल उनके पास जाकर उन्हें शिक्षा प्रदान करे।**

इसकी कल्पना एन. कृष्णास्वामी, रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर, तमिलनाडु की है। केरला राज्य में यह ऐसी एकमात्र संकल्पना है।

ज्योतिर्गमय के माध्यम से टिफ्फनी और उसके सहयोगी तिरुवनंतपुरम में रहने वाले दृष्टिहीन लोगो के घर में जाकर उनका मार्गदर्शन करते है। टीम उन्हें ब्रेल, कंप्यूटर और पर्सनल स्किल्स के बारे में जानकारी देता है। सफ़ेद छड़ी का इस्तेमाल करके खुदको आत्मनिर्भर बनाकर चलना सिखाया जाता है। ज्योतिर्गमय केरला में कैम्पस का आयोजन भी करती है। आउटडोर एक्टिविटीज, सिटी टूर और अन्य माध्यम से वो उन्हें छोटी छोटी चीजे सिखाती है जिनका उपयोग रोज आनेवाली कठिनाईयों का सामना करने के लिये किया जा सकता है।

२६ वर्षीय टिफ्फनी को इस मिशन से अपने जिंदगी का मकसद मिल गया है।

**टिफ्फनी बड़े ही उत्साह से कहती है -**

"नेत्रहीन और सामान्य व्यक्ति के बीच हमारे समाज में अभी भी शारीरिक और मानसिक दुरी है। मैं ऐसी कठिनाईयो को दूर करके ऐसा वातावरण निर्माण करना चाहती हूँ, जिसमे अंधे लोग सहजता से चल सके, काम कर सके, अपने बारे में सोच सके और सामान्य लोगो के जैसा जीवन व्यतीत कर सके। लोगो को लगता है कि हम सिर्फ गाना गा सकते है, शिक्षक बन सकते है और बैंक में टेलीफोन ऑपरेटर की नौकरी कर सकते है। पर हम इससे भी ज्यादा कर सकते है। हम नाच सकते है, हम मार्शल आर्ट्स सीख सकते है, हम कंपनी में बड़े ओहदों पर काम कर सकते है। समाज हमेशा हमें, हम क्या नही कर सकते है, इसी के बारे में सोचने पर विवश करता है। मुझे लगता है हमें ये सोच बदलनी चाहिये।"

टिफ्फनी की आँखों में भले ही रौशनी न हो पर उनमे सपने है; और ये सपने उन्हें कुछ भी करने से नहीं रोक सकते!

# दिव्यांग भी कर सकते हैं चमत्कार, उनको प्यार दें और हौसला बढ़ाएँ

**शारीरिक व्याधियों से जूझ रहे लोगों को "डिजेबल्ड" न कहकर " डिफरेंटली एबल्ड" कहना ज्यादा अच्छा होगा। अगर उन्हें उनकी वास्तविक शक्ति का अहसास दिलाया जाये तो उनके साधारण से कुछ खास बनने में उन्हें देर नहीं लगेगी।**

प्रतिवर्ष 3 दिसंबर का दिन दुनियाभर में दिव्यांगों की समाज में मौजूदा स्थिति, उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने तथा सुनहरे भविष्य हेतु भावी कल्याणकारी योजनाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए जाना जाता है। दरअसल यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक मुहिम का हिस्सा है जिसका उद्देश्य दिव्यांगजनों को मानसिक रुप से सबल बनाना तथा अन्य लोगों में उनके प्रति सहयोग की भावना का विकास करना है। एक दिवस के तौर पर इस आयोजन को मनाने की औपचारिक शुरुआत वर्ष 1992 से हुई थी। जबकि इससे एक वर्ष पूर्व 1991 में सयुंक्त राष्ट्र संघ ने 3 दिसंबर से प्रतिवर्ष इस तिथि को अन्तरराष्ट्रीय विकलांग दिवस के रूप में मनाने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी।

मेडिकल कारणों से कभी-कभी व्यक्ति के विशेष अंगों में दोष उत्पन्न हो जाता है, जिसकी वजह से उन्हें समाज में 'विकलांग' की संज्ञा दे दी जाती है और उन्हें एक विशेष वर्ग के सदस्य के तौर पर देखा जाने लगता है। आमतौर पर हमारे देश में दिव्यांगों के प्रति दो तरह की धारणाएं देखने को मिलती हैं। पहला, यह कि जरूर इसने पिछले जन्म में कोई पाप किया होगा, इसलिए उन्हें ऐसी सजा मिली है और दूसरा कि उनका जन्म ही कठिनाइयों को सहने के लिए हुआ है, इसलिए उन पर दया दिखानी चाहिए। हालांकि यह दोनों धारणाएं पूरी तरह बेबुनियाद और तर्कहीन हैं। बावजूद इसके, दिव्यांगों पर लोग जाने-अनजाने छींटाकशी करने से बाज नहीं आते। वे इतना भी नहीं समझ पाते हैं कि क्षणिक मनोरंजन की खातिर दिव्यांगों का उपहास उड़ाने से

भुक्तभोगी की मनोदशा किस हाल में होगी। तरस आता है ऐसे लोगों की मानसिकता पर, जो दर्द बांटने की बजाय बढ़ाने पर तुले होते हैं। एक निःशक्त व्यक्ति की जिंदगी काफी दुख भरी होती है। घर-परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है। वास्तव में लोगों के तिरस्कार की वजह से दिव्यांग स्व-केंद्रित जीवनशैली व्यतीत करने को विवश हो जाते हैं। दिव्यांगों का इस तरह बिखराव उनके मन में जीवन के प्रति अरुचिकर भावना को जन्म देता है। देखा जाये तो भारत में दिव्यांगों की स्थिति संसार के अन्य देशों की तुलना में थोड़ी दयनीय ही कही जाएगी। दयनीय इसलिए कि एक तरफ यहां के लोगों द्वारा दिव्यांगों को प्रेरित कम हतोत्साहित अधिक किया जाता है। कुल जनसंख्या का मुट्ठी भर यह हिस्सा आज हर दृष्टि से उपेक्षा का शिकार है। देखा यह भी जाता है कि उन्हें सहयोग कम मजाक का पात्र अधिक बनाया जाता है। दूसरी तरफ विदेशों में दिव्यांगों के लिए बीमा तक की व्यवस्था है जिससे उन्हें हरसंभव मदद मिल जाती है जबकि भारत में ऐसा कुछ भी नहीं है।

हां, दिव्यांगों के हित में बने ढेरों अधिनियम संविधान की शोभा जरूर बढ़ा रहे हैं, लेकिन व्यवहार के धरातल पर देखा जाये तो आजादी के सात दशक बाद भी समाज में दिव्यांगों की स्थिति शोचनीय ही है। जरूरी यह है कि दिव्यांगजनों के शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधन के साथ उपलब्ध अवसरों तक पहुंचने की सुलभ व्यवस्था हो। दूसरी तरफ यह भी देखा जा रहा है कि प्रतिमाह दिव्यांगों को दी जाने वाली पेंशन में भी राज्यवार भेदभाव होता है। मसलन, दिल्ली में यह राशि प्रतिमाह 1500 रुपये है तो झारखंड सहित कुछ अन्य राज्यों में विकलांगजनों को महज 400 रुपये रस्म अदायगी के तौर पर दिये जाते हैं। समस्या यह भी है कि इस राशि की निकासी के लिए भी उन्हें काफी भागदौड़ करनी पड़ती है।

दरअसल, हमारे देश में दिव्यांगों के उत्थान के प्रति सरकारी तंत्र में अजीब-सी शिथिलता नजर आती है। हालांकि, हर स्तर से दिव्यांगों के प्रति दयाभाव जरूर प्रकट किये जाते हैं, लेकिन इससे किसी दिव्यांग का पेट तो नहीं ना भरता है ! आलम यह है कि आज दिव्यांग लोगों को ताउम्र अपने परिवार पर आश्रित रहना पड़ता है। इस कारण, वह या तो परिवार के लिए बोझ बन जाता है या उनकी इच्छाएं अकारण दबा दी जाती हैं। वहीं, दूसरी तरफ दिव्यांगों के लिए क्षमतानुसार कौशल प्रशिक्षण जैसी योजनाओं के होने के बावजूद जागरूकता के अभाव में दिव्यांग आबादी का एक बड़ा हिस्सा ताउम्र बेरोजगार रह जाता है। अगर उन्हें शिक्षित कर सृजनात्मक कार्यों की ओर मोड़ा जाता है तो वे भी राष्ट्रीय संपत्ति की वृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं।

इस तरह स्वावलंबी होने से वह अपने परिवार या आश्रितों पर बोझ नहीं बनेगा और धीरे-धीरे वह उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम भी बढ़ाता नजर आएगा। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री ने अगले सात वर्षों में 38 लाख विकलांगों को लक्ष्य बनाकर राष्ट्रीय कौशल नीति पेश की है। इससे पहले भी दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना आंशिक रूप से प्रचलन में थी। जिसके तहत विकलांग व्यक्तियों के कौशल उन्नयन हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र परियोजनाओं को वित्तीय सहायता (परियोजना लागत के 90 प्रतिशत तक) प्रदान की जाती है।

यह कौशल 15 से 35 वर्ष की आयु समूह के लिए है ताकि ऐसे व्यक्ति आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे आ सकें। यह पहल सराहनीय है कि सरकार का सामाजिक न्याय और आधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत बनाया गया विकलांग सशक्तिकरण विभाग विकलांगों की राष्ट्रीय कार्य योजना और सुगम्य भारत अभियान के माध्यम से एक बेहतर माहौल बनाने की कोशिशें की जा रही हैं।

आंकड़ों के लिहाज से भारत में करीब दो करोड़ लोग शरीर के किसी विशेष अंग से विकलांगता के शिकार हैं। दिव्यांगजनों को मानसिक सहयोग की जरूरत है। परिवार, समाज के लोगों से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें आगे बढ़ने को प्रेरित करें।

शारीरिक व्याधियों से जूझ रहे लोगों को 'डिजेबल्ड' न कहकर 'डिफरेंटली एबल्ड' कहना ज्यादा अच्छा होगा। अगर उन्हें उनकी वास्तविक शक्ति का अहसास दिलाया जाये तो उनके साधारण से कुछ खास बनने में उन्हें देर नहीं लगेगी। हमारे सामने वैज्ञानिक व खगोलविद स्टीफन हॉकिंग, भारतीय पैराओलंपियन देवेंद्र झांझरिया, धावक ऑस्कर पिस्टोरियस, मशहूर लेखिका हेलेन केलर जैसे लोगों की लंबी फेहरिस्त है, जिन्होंने विकलांगता को कमजोरी नहीं समझा, बल्कि चुनौती के रूप में लिया और आज हम उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें याद करते हैं।

यदि समाज में सहयोग का वातावरण बने, लोग किसी दूसरे की शारीरिक कमजोरी का मजाक न उड़ाएं, तो आगे आने वाले दिनों में हमें सकारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

समाज के इस वर्ग को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाये तो वे कोयला को हीरा भी बना सकते हैं। समाज में उन्हें अपनत्व-भरा वातावरण मिले तो वे इतिहास रच देंगे और रचते आएं हैं। एक दिव्यांग की जिंदगी काफी दुखों भरी होती है। घर-परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें, तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है। वैसे तो दिव्यांगों के पक्ष में हमारे देश में दर्जन भर कानून बनाए गए हैं, यहां तक कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी दिया गया है, परंतु ये सभी चीजें गौण हैं, जब तक हम उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना बंद ना करें। वे भी तो मनुष्य हैं, प्यार और सम्मान के भूखे हैं। उन्हें भी समाज में आम लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है।

उनके अंदर भी अपने माता-पिता, समाज व देश का नाम रोशन करने का सपना है। बस स्टॉप, सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने, पंक्तिबद्ध होते वक्त हमें यथासंभव उनकी सहायता करनी चाहिए। आइए, एक ऐसा स्वच्छ माहौल तैयार करें, जहां उन्हें क्षणिक भी अनुभव ना हो कि उनके अंदर शारीरिक रूप से कुछ कमी भी है। इस बार के 'विश्व विकलांग दिवस' पर मेरी यह छोटी-सी अपील है कि दिव्यांगों का मजाक न उड़ाएं, उन्हें सहयोग दें।

...अंत में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस सुझाव को दोहराना चाहूंगा, जिसमें उन्होंने निःशक्तों (विकलांगों) को 'दिव्यांग' कहने का उचित विचार दिया था। यह महज एक औपचारिकता ना रहे, इसलिए इस सुझाव को व्यवहार में लाया जाना चाहिए।

# दिव्यांग को ५ पेंशन की रकम एडवांस देगी सरकार, १ नवंबर से शुरू करेगी योजना

## यह राशि 200 रुपए की मासिक किस्तों में यानी करीब 3 साल में वसूल की जाएगी।

**पानीपत :** हरियाणा के दिव्यांग को 5 पेंशन के बराबर की राशि सरकार एडवांस देगी। इस पर उनसे किसी तरह का ब्याज नहीं लिया जाएगा। यह राशि 200 रुपए की मासिक किस्तों में यानी करीब 3 साल में वसूल की जाएगी।

राज्य में अभी दिव्यांग को 1400 रुपए प्रतिमाह की दर से पेंशन मिलती है। इस तरह उन्हें एकमुश्त 7000 रुपए की राशि मिल जाएगी। इससे वे अपने घर अथवा कार्य स्थल पर रैंप, टॉयलेट में छोटा-मोटा सुधार अथवा अन्य काम कर सकते हैं। इस फैसले से राज्य के करीब 1.50 लाख दिव्यांग पेंशनर्स को फायदा मिलेगा।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी के मुताबिक हरियाणा की स्वर्ण जयंती वर्ष में शुरू की जाने वाली इस योजना को सीएम मनोहर लाल खट्टर ने मंजूरी दी है। संभवत: 1 नवंबर से यह योजना प्रदेशभर में लागू कर दी जाएगी। साथ ही दिव्यांग की सुविधा के लिए राज्य के सभी सरकारी, बोर्ड, निगम, आयोग आदि कार्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर रैंप, टॉयलेट एवं अन्य सुविधाएं विकसित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत पहले चरण में गुड़गांव, फरीदाबाद जैसे बड़े शहरों को चुना गया है।

बेदी ने बताया कि हरियाणा में इस समय करीब 14 लाख ओल्ड एज, 1.50 लाख दिव्यांग, 6.08 लाख विधवाओं और करीब 1 लाख परित्यक्त बच्चों समेत कुल 23 लाख लोगों को 1400 रुपए प्रति माह की दर से सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जा रही है। इन सभी को समय पर पेंशन मिल सके इसलिए इनके बैंक खाते में सीधा भुगतान किया जा रहा है। इससे पेंशनर्स को पेंशन के लिए अनावश्यक चक्कर लगाने से राहत मिली है और बीच में किसी तरह की गड़बड़ होने की भी कोई गुंजाइश नहीं है।

उन्होंने बताया कि भाजपा सरकार अगले साल जनवरी में इनकी पेंशन बढ़ाकर 1600 रुपए करेगी और वर्ष 2019 तक जब विधानसभा चुनाव होंगे, तब तक पेंशन की यह राशि 2000 रुपए मासिक हो जाएगी।

### अब 60 फीसदी विकलांगता पर मिलेगी पूरी पेंशन

प्रदेश में अब 60 फीसदी विकलांगता पर ही पूरी पेंशन दी जाएगी। अभी इसके लिए 70 फीसदी विकलांगता होना जरूरी है। साथ ही पेंशन के नियमों में कुछ और छूट देकर ज्यादा लोगों को फायदा दिए जाने की तैयारी है। दूसरी कैटेगरी में अब 40 से 60 फीसदी के बीच विकलांगता वाले दिव्यांग को भी पेंशन दी जाएगी। केंद्र सरकार में इस तरह का प्रावधान किया हुआ है।

अहमदाबाद में अखबारनगर स्थित स्मित दिव्यांग बच्चों की स्पेशियल स्कुल में दिव्यांग बच्चों को संगीत में रूचि रखने के प्रयास में मंगलवार को गायत्री परिवार-नारणपुरा द्वारा सुंदरकांड का आयोजन किया गया। जिस में स्कुल के सभी बच्चों ने हिस्सा लिया। स्कुल के संचालक चंदुभाई चौहाण ने बताया की सभी बच्चों को प्रोत्साहन के लिए ईनाम दिया गया।

स्मित दिव्यांग बच्चो की स्पेश्यल स्कुल में दिव्यांग बच्चो को
२१ जुन योगा दिन के दिवस पर बच्चो के लिए योगा का आयोजन किया था।

# लायंस क्लब ऑफ अमदावाद संवेदना
## लायंस कर्णावती नेत्र अस्पताल
## नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट

We Serve

BRING THEM A NEW LIFE

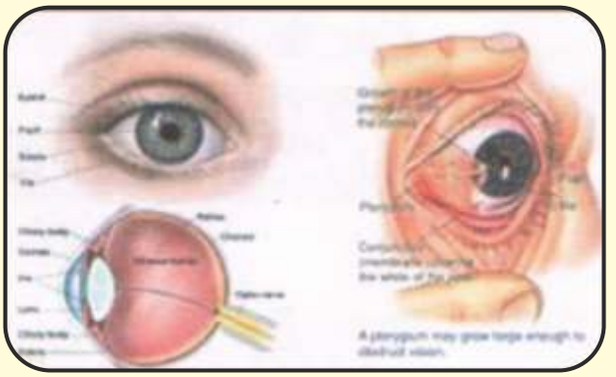

## निःशुल्क नेत्र निदान जाँच केंद्र

नेत्र निदान केंद्र द्वारा

निःशुल्क मोतियाबिंद का ऑपरेशन

समय : नेत्र निदान के लिए हर सोमवार
सुबह ९-०० से ११-००

- हर सोमवार को निम्नलिखित पते पर सुबह ९ से ११ तक नेत्र के रोग की जांच जिसमें मोतियाबिंद और जामरव्हेल का निदान निःशुल्क होगा।
- जरूरतमंद मरीजों का मोतियाबिंद का ऑपरेशन नेत्रमणि के साथ निःशुल्क किया जाएगा।

## नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट

वोटर स्टेशन, सर्जन टावर के पास, जोगणी मंदिर लेन, मेमनगर, अमदावाद-५२

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर